दलित विमर्श और डॉ. अम्बेडकर

डॉ. दिनेश जी. सोलंकी
अध्यापक,
सरकारी आर्ट्स कालेज, झगडिया

१. प्रास्ताविक

अम्बेडकर कहते हैं भारतीय समाज में दलित वर्ग का स्थान सबसे निचले हिस्से का रहा है। दलित यानि शुद्र या निम्न जाति के लोगों में शिक्षा, सामाजिक स्वतंत्रता,अभिव्यक्ति आदि में स्वतंत्रता नहीं थी। दलित जातियों के लोगों को छुआछूत की समस्या से जूझना पड़ा है| ऐसा दृश्य अम्बेडकर ने देखा है , और खुद ने सहा भी है। दलित समाज की यथार्थ स्थिति से वाकिफ़ अम्बेडकर ने दलित समाज तथा श्रमजीवी निचले वर्ग के लिए एक दृढ संकल्प किया था, जिस संकल्प को अम्बेडकर ने असहय कष्ट झेलकर संघर्ष करते हुए भारतीय संविधान में दलितों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की और दलितों के स्वातंत्र्य तथा अस्मिता को समाज में स्वीकार करने के लिए सभी जातियों के लोगों को राजी किया है। यही है अम्बेडकर का महत्वपूर्ण कार्य।

दलित विमर्श में अग्रगण्य कार्य या सहभागीदारिता दिखाने वाले एक विरल विभूति डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर है। जिन्होंने दलित समाज के लिए अपना समस्त जीवन बलिदानी के रूप में बिताया है। दलित समाज की समस्याओं को देखकर वह द्रवित हो जाते थे, इसलिए अम्बेडकर ने भारतीय समाज की कलंकरूप अस्पृश्यता या छूआछूत की समस्या से लड़ते हुए समस्त भारत में दलित (शुद्र) समाज के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। इसलिए डॉ. अम्बेडकर के इस महान कार्य की नोटिश न्यूयोर्क टाईम्स ऑफ इंडिया' ने भी ली है। जिसमें बताया है कि, अस्पृश्य जाति के प्रखर हिमायती के रूप में अम्बेडकर का नाम समग्र विश्व में प्रसिद्ध रहेगा।"[१] दलित समाज के लिए अपने जीवनोत्सर्ग करने वाले डॉ. भीमराव अम्बेडकर के लिए भारत के राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा है कि "अम्बेडकर भारतीय बंधारण के शिल्पकार है, उन्होंने अनेक क्षेत्रों में की हुई सेवा और उसमें भी सबसे अहम दलितों के उध्दार के लिए की हुई सेवा अत्यंत महान है।" [२]

भीमराव और दलित समाज ये दोनों एक दूसरे के पूरक है अभिन्न है, जिसको अलग नहीं किया जा सकता। भीमराव एक दलित है, इसलिए दलित जीवन की समस्याओं को देखा है, भोगा है। शायद अम्बेडकर दूसरे जाति के होते तो ये उनकी समाज भावना में दलितों की समस्या के प्रति सूक्ष्म दृष्टी नहीं पनपती, जितनी एक दलित समाज में जन्म लेकर वह लाखों एवं करोडो लोगों के आदर्श व्यक्ति बने है। इसलिए में कहना चाहता हूँ कि भारतीय संविधान के रचनाकार एवं दलित समाज का एक मात्र योद्धा डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जीवन हमारे सभी के लिए गौरव पाने जैसा है। लाखों -कोटि पद-दलितों के सहायक एवं श्रमजीवी समाज के लोगों का वह प्रेरणा स्रोत और सच्चे मार्गदर्शक थे, आज भी है, और भविष्य की जनता के वह आदर्श बने रहेंगे।"

भारतीय अर्थतंत्र की ढाई हजार वर्षों में गुलामी की जंजीरों में कैद ,शोषित ,पीडित दलित जनता की मुक्ति के लिए सदैव प्रयत्नशील महामानव यानि डॉ..भीमराव अम्बेडकर। अम्बेडकर की दलित चेतना के बारे में बताने से पहले में अम्बेडकर की शैक्षिक (विद्यानुरागी) अवस्था बताना चाहता हूँ। डॉ. भीमराव अम्बेडकर समग्र

विश्व के विद्यार्थियों में सर्व श्रेष्ठ है, जो उनका प्रखर पांडित्य तथा किताब प्रेम से पता चल सकता है । अम्बेडकर ने अर्थशास्त्र राजनीतिशास्त्र, नृवंशशास्त्र समाजशास्त्र, धर्म ,कानून एवं इतिहास संस्कृत-शास्त्रों सभी का गहन अध्ययन किया था । एक जगह भीमराव ने लिखा है में तो आजीवन व्यत्र हूँ , मुझे अभी बहुत कुछ प्राप्त करना है । मेरे पूर्व के विद्वानों ने जो अमूल्य योगदान दिया है ऐसा मैं। कुछ भी नहीं कर सका,जिसका मुझे बहुत खेद है ।" [३]

२. दलित चेतना

२.१ विश्व के फलक पर दलितों की दास्ताँ

भारतीय इतिहास में १९३० का वर्ष नूतन विचार नूतन ओज (तेज) पराक्रम और प्रतिकार के लिए प्रसिद्ध है। बारहवीं मार्च १९३० के दिन महात्मा गाँधी ने दांडी यात्रा आरंभ की थी, वहाँ से भारतीय स्वतंत्रता की लड़ाई का सत्याग्रह शुरू हुआ । उसी तरह सन २ मार्च १९३०के दिन डॉ.. अम्बेडकर की अगुआई में दलित हिन्दूओं के सामाजिक स्वातंत्र्य के लिए नासिक मंदिर प्रवेश का संघर्ष शुरू हुआ । उसमें सत्याग्रह संबंधी कार्य प्रणाली का विचार विनिमय हुआ । दलितों की एकजुटता के लिए अम्बेडकर ने महाराष्ट्र कर्णाटक और गुजरात के दलित सत्याग्रही भाईयों और बहनों को एकत्रित किया था। भारतीय समाज के छूआछूत से मुक्ति हेतु यह आंदोलन चलाया था । यह बात पूरे भारत में फैल चुकी थी और भारतीय समाज की संकीर्णता विश्व फलक आ गयी थी । " मंदिर प्रवेश सत्याग्रह से नासिक जिले के अस्पृश्य लोगों को बहुत यातना कष्ट झेलना पड़ा था । उसके बच्चों के लिए शाला भी बंध कर दी गयी थी ।" [४]

२.२ श्रमजीवियों का श्रेय और शिक्षण प्रसार

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने महाराष्ट्र में दलित एवं श्रमजीवी वर्ग के बच्चों को शिक्षा देने के लिए कार्यशील थे। अम्बेडकर के प्रस्ताव के कारण ८ अक्तूबर ,१९२८ के दिन एक योजना को अनुमति मिली | इस योजना के तहत दलित वर्ग के बच्चों को शिक्षा प्राप्ति हेतु से पाँच छात्रालय योजना को मान्यता मिलेगी ऐसी बात राज्यपाल ने बताई थी। आज की शिक्षा व्यवस्था में दलित एवं श्रमजीवी तथा आदिवासी वर्ग के बच्चों के लिए सरकार ने प्राइमरी शिक्षण मुफ्त में देने की व्यवस्था की | उच्च शिक्षण में भी दलित विद्यार्थियो की आदिवासी विद्यार्थियो की जगह कुछ प्रतिशत तय की है । जिससे विद्यार्थी उच्च शिक्षा भी प्राप्त करते हैं। ऐसे नौकरी में भी निम्न वर्गों जगह भी भरने की व्यवस्था की है । जिससे दलित एवं श्रमजीवी वर्गों में भी बच्चों का शिक्षण ऊपर उठा है। हिन्दी साहित्य में नवें दशक से जो चीज चर्चा का विषय बनी है ,वह है -दलित विमर्श और लेखन । आरंभ में हिन्दी का दलित मराठी लेखन से प्रेरित हुआ । स्वाधीनता संग्राम के समय महात्मा गाँधी और डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने दलितों के बारे में उनकी समस्याओं के बारे में बहुत कुछ सोचा विचारा और उसका समाधान भी किया । दलित समाज के लोगों के प्रति गांधीजी की सहानुभूति सच्ची थी, लेकिन वो हरिजन और दलितोद्धार की बात करते हुए भी वर्णव्यवस्था के मुख से बाहर न निकल पाए । डॉ. भीमराव की दृष्टी उनसे विमुख थी । "[५] वे दलितों की अस्मिता स्वतंत्रता समानता सामान अधिकार और आत्मसम्मान के पक्षपाती थे। इसलिए महात्मा गांधी और अम्बेडकर के बीच आजीवन मतभेद बने रहे । अम्बेडकर जाति व्यवस्था और वर्ण व्यवस्था के कट्टर विरोधी थे । डॉ. अम्बेडकर ने दलित आंदोलन का सूत्रपात किया । बहिस्कृत हितकारिणी सभा (सन -१९२४), अखिल भारतीय दलित संगठन की स्थापना उनके हाथों हुई । अम्बेडकर के इस कार्य का प्रभाव महाराष्ट्र पर पड़ा । महाराष्ट्र में दलित आंदोलन के बाद में भारत के हर प्रांत में दलितों को प्रभावित किया । पहली बार दलितों ने अपने लेखन के माध्यम से अपनी अस्मिता अधिकार का प्रश्न उठाया ,अपने

साहित्य के मूल्यांकन के लिए नए सौन्दर्य-शास्त्र की मांग की । सवर्ण साहित्यकार भी दलितों की समस्या पर दलितों की सामाजिक विषमता अधिकारों, छूआछूत की पीड़ा को अपने साहित्य में वर्णित करके सामाज में क्रांति लाने का आहवान सवर्ण दलित साहित्यकार तथा दलित -लेखकों, लेखिकाएं ने किया है।

३. दलित वर्ग से एक प्रचंड शक्तिशाली राजपुरूष के रूप में अम्बेडकर

अम्बेडकर महार जाति के थे, जो दलित में आती है । अम्बेडकर दलित होने की वजह से बचपन से ही अस्पृश्यता के नाम पर उनके साथ हुए अमानवीय वर्तन के कारण डॉ.. भीमराव अम्बेडकर का हृदय गहरे विषाद, उन्माद से त्रस्त था । अम्बेडकर ने दलितों की आछूत की कडियों में गंध जिंदगी को मनोमन मुक्ति दिलाने की अडिग प्रतिज्ञा की, और अम्बेडकर ने अपना समस्त जीवन दलित निम्न शुद्र तथा श्रमजीवियों के हित के लिए किया । महार जाति को सैनिक में भर्ती करवाने की अनुमति प्राप्त कर ली । कई सारे युवान सैनिक भर्ती में दाखिल हुए । महारों के सैन्यीकरण के लिए अम्बेडकर के प्रयत्न (कार्य) को प्रोत्साहित करते हुए वीर सावरकर ने लिखा है ।

अम्बेडकर के मार्गदर्शन दर्शन से महार-जातियों के लड़ायक गुणों का फिर से प्रज्वलित होना, और उसकी लड़ायक शक्ति का उपयोग संघ शक्ति को बढ़ाने में होगा । ऐसा मुझे विश्वास है ।"[६] -वीर सावरकर

४. गाँधी-अम्बेडकर का वैचारिक संघर्ष

महात्मा गाँधी और अम्बेडकर के बीच मतभेद आजीवन रहा । डॉ. अम्बेडकर अपने और दलित व्यक्तियों को हिन्दू नहीं मानते थे । और वह कहते थे कि अगर हम हिन्दू होते तो देश के अन्य हिन्दूओं की भौति हमें भी व्यक्ति स्वातंत्र्य आदि । मानव जीवन के स्वातंत्र्य पक्ष में शामिल होते । इसलिए डॉ.. अम्बेडकर ने मरने से पहले हिन्दू के रूप में न मरने का वचन लिया था, अम्बेडकर ने बाद में धर्म परिवर्तन करके बोद्ध धर्म के अनुयायी बने थे, और बहुत सारे दलित लोगों को भी बोद्ध धर्म से दीक्षा प्राप्त करवाई थी।

बुद्ध शरणम् गच्छामि
संघम शरणम् गच्छामि।"

५. मनु-स्मृति दहन

अम्बेडकर का यह विचार उसे जर्मनी के मार्टिन ल्यूथर उपमा दिलवाता है । अम्बेडकर ने लोगों को बताया कि-'ऊँच-नीच के भेदभाव और अस्पृश्यता प्रयोपता धर्म ग्रंथों की अम्बेडकर एवं दलित भाईयों के द्वारा टिका हुई। जिसमें धर्म -ग्रंथ मनु स्मृति को मनुष्य मनुष्य में सामाजिक विषमता के कारण सर्वानुमते मनु -स्मृति का दहन करने का निर्णय हुआ । महाड़ के इस आदोलन में मनु-स्मृति को जलाई गई। जिससे पंडितों, ब्राह्मण, आचार्य, महन्तों, शंकराचार्यों आदि में आश्चर्य भाव उत्पन्न हुआ । और सब धर्माध लोग कहने लगे कलि युग आया है। ऐसा कहकर कड़वे घुट पि गए । "डॉ. अम्बेडकर ने महाड में असमानता , अमानुषिकता, अन्याय और क्रूरता का उपदेश देने वाले धार्मिक ग्रंथ मनु -स्मृति दहन करके ऐतिहासिक कार्य किया । जिस प्रकार से मार्टिन ल्यूथर ने विटेन - वर्ग में बिस्ती धर्म-गुरु पॉप की पाप विमोचन पत्रिका को जनता के बीच में जलाकर एक विद्रोह की चिन्गारी जलाई थी मार्टिन ल्यूथर ने धर्म - क्रांति के लिए यह कार्य किया था । अम्बेडकर ने यह कार्य (मनु स्मृति दहन) सामाजिक क्रान्ति के लिए किया । "[७]

दलित - विमर्श और अम्बेडकर विषय को विस्तार देते है, तो बहुत सी दलित समाज की यथार्थ दास्ताँ हमारे सामने आती है। डॉ.. अम्बेडकर ने दलितोत्थान के लिए उनके विचार दलितों में साहस, संघर्ष, शूरवीरता, स्थिरता प्रदान करता है । डॉ. अम्बेडकर कहते हैं कि तुम खुद को कभी अस्पृश्य न मानना, स्वच्छ जीवन जीओ । सवर्ण समाज की स्त्रियों की भाँति तुम भी अच्छे कपड़े पहनों, कभी भी उस बात की चिंता मत करना कि हमारे कपड़े पुराने और फटें हुए है। लेकिन उस बात का ध्यान अवश्य रखना कि वह स्वच्छ है ।"[८]

संदर्भ सूचि

१. कीर, धनंजय (पद्म विभूषण) डॉ. अम्बेडकर जीवन और कार्य , - पृष्ठ -१६६
२. कीर, धनंजय (पद्म विभूषण) डॉ. अम्बेडकर जीवन और कार्य, पृष्ठ -४०९
३. डॉ. अम्बेडकर ग्रंथमाला, पृष्ठ -५ कोठारी प्रकाशन गृह
४. डॉ. अम्बेडकर ग्रंथमाला, पृष्ठ -६ कोठारी प्रकाशन गृह
५. डॉ. अम्बेडकर ग्रंथमाला, भाग -५ पृष्ठ -२५ ,कोठारी प्रकाशन गृह
६. परमार,रमेशचंद्र डॉ. अम्बेडकर शताब्दी गुर्जर अंथ श्रेणी, पृष्ठ -५९
७. परमार,रमेशचंद्र विद्यापुरुष अम्बेडकर - पृष्ठ -४ , गुर्जर ग्रंथ रत्न कार्यालय
८. हिन्दी साहित्य : सामान्य परिचय , डॉ. दयाशंकर त्रिपाठी ,पृष्ठ -३९